वायरल रोग

1. रानीखेत :–

यह संक्रामक रोग मुर्गियों में किसी भी उम्र तथा समय में हो सकता है।

लक्षण :–

1- रेसपायरेटरी फॉर्मः (Respiratory)

(अ) चुजों में रोग के लक्षण दिखने के पूर्व ही चुजे मर जाते हैं । कुछ चुजों में सांस लेने की तकलीफ देखी जाती है।

(ब) बड़े पक्षियों में – पक्षी खाना बंद कर देते हैं। तापमान 108 डिग्री से 110 डिग्री फै. हो जाता है। सांस लेते समय सीटी की आवाज होती है। मुह से गाढ़ी लार गिरती है। पक्षी मुंह खोलकर झटके से सांस लेता है। कलगी काली पड़ जाती है। दस्त में खून आना प्रारंभ हो जाता है। 3–4 दिन में पक्षी मर जाता है।

पक्षियों में 80 से लेकर शतप्रतिशत तक मृत्यु हो सकती है।

2. न्यूरल फॉर्म :– पक्षियों के पंख, पैर तथा गले में लकवा लग जाता है।
3. विसिरल फॉर्म :– क्राप, प्रोवेन्ट्रीक्यूलस तथा आंतो में घाव हो जाते हैं, जो बाहर से नहीं देखे जा सकते ।

जांच :–

भाव परीक्षण में प्रावेन्ट्रीक्यूलस की ग्रंथियों पर घाव होने से खून रिसने लगता है। आंतो में घाव हो जाते हैं। रोगी पक्षी की स्प्लीन को ग्लिसरीन से लाइन घोल में बर्फ पर रख कर लेबोरेटरी भेजना चाहिये।

उपचार :–

इस रोग का कोई उपचार नहीं है केवल टीकाकरण द्वारा ही पक्षियों को रोग से बचाया जा सकता है।

टीकाकरण

1. चुजों मे :– 1 दिन से लेकर 7 दिन की उम्र के चुजों का रानीखेत एफ स्ट्रेन बेक्सीन का टीका लगाना चाहिये।
2. अन्य पक्षियों में :– 8 से 10 सप्ताह की उम्र में रानीखेत रेग्यूलर (मुकतेवर) स्ट्रेन बेक्सीन का टीका लगाना चाहिये।

2. फाउल पॉक्स

यह संक्रामक रोग मुर्गियों में किसी भी उम्र में हो सकता है। छोटी उम्र की मुर्गियों मे अधिक मृत्यु होती है। यह दो रूप मे होता है –

1. त्वचा रूप – इसमे कलगी, वैटल, पैर आदि पर दाने निकलते है,
2. केन्कर रूप – इसमें मुंह के अन्दर नाक तथा आंख में दाने निकलते हैं ।

लक्षण :–

त्वचा रूप में कलगी आदि पर छोटे–छोटे दाने प्रारंभ होते हैं फिर पीले तथा भूरे रंग के हो कर 4 सप्ताह तक सूख जाते हैं। केन्कर रूप में पक्षी खाना बंद कर सुस्त हो जाते हैं। मुंह, नाक, तथा आंख में दानों के ऊपर गाढ़ा म्यूकस जम जाता है जिससे श्वास लेने में कठिनाई होती है और पक्षियों में मृत्यु हो सकती है। मुर्गियों में अण्डा उत्पादन कम हो जाता हैं।

जांच :–

कलगी तथा मुंह आदि में दानों को देखकर रोग की पहचान की जा सकती है।

उपचार :–

रोगी मुर्गियों को अन्य कीटाणुओं का प्रकोप न हो जाये इसके लिये उन्हें पानी में एन्टीवायाटिक दवायें देना चाहिये। रोगी मुर्गियों को अलग रखना चाहिये।

बचाव :–

6 से 8 सप्ताह की उम्र में मुर्गियों को पिजिनपाक्स तथा 10 से 12 सप्ताह की उम्र में फाउल पाक्स टीका लगाना चाहिये। फाउल पाक्स टीका प्रत्येक वर्ष लगा देना चाहिये।

3. क्रानिक रेसपायेरटरी रोग (CRD)

यह रोग शीतऋतु में छोटी उम्र के पक्षियों को अधिक होता है।

लक्षण :–

नाक से म्युकस निकलना, छींकना, आंख तथा नाक पर सूजन, खाना बंद करना, अण्डा उत्पादन कम होना, मुर्गी सुस्त हो कर समूह में खड़ी हो जाती है। भारीर के पंखों की चमक कम हो जाती है। अण्डों के छिलके पतले होने लगते है।

जांच :–

लक्षण तथा लेबोरेटरी में जांच के द्वारा की जाती है।

उपचार :–

दाने तथा पानी में एन्टीबायोटिक तथा नाइट्रोफोरान देना चाहिये। हैचिंग के अण्डों को एरथ्रामाइसिन के घोल में डुबोकर हैचिंग करना चाहिये।

बचाव :–

कुक्कुट ग्रह का वेन्टीलेशन अच्छा रखना चाहिये। रोगी मुर्गियों को स्वस्थ्य मुर्गियों से अलग रखना चाहिये। मुर्गियों को स्ट्रेस से बचाना चाहिये।

4. इन्फेक्शियस ब्रॉन्काइटिस

वायरस के द्वारा चुजो तथा बड़ी मुर्गियों मे होता है। रोग शीघ्र फैलता है।

लक्षण :–

1. चुजों में – छींकना, खांसी, मुह खोलकर सांस लेना, सांस लेते समय आवाज करना, नाक से म्यूकस निकलना, आंखों से पानी बहना आदि। मृत्यु 25 प्रतिशत तक हो सकती है।
2. बड़ी मुर्गियों में– अण्डा उत्पादन कम होना, अण्डों का आकार तथा छिलका ठीक नहीं होना।

उपचार तथा नियंत्रण :–

रोग का टीका लगाना चाहिये। पानी मे एन्टीबायोटिक विटामिन आदि देना चाहिये। मुर्गियों को ठण्ड से बचाना चाहिये।

5. इन्फेक्शियस लेरिंगो ट्रेकायटिस

लक्षण :–

रोग धीरे धीरे फैलता है। छींकना, खांसी, श्वांस में कठिनाई, मुर्गी सुस्त तथा कमजोर हो जाती है। श्वांस लेने में विशेष प्रकार की आवाज होती है। खांसी के साथ रक्त वाला कफ बाहर आता है। मुंह तथा वैटन पर सूजन भी आ जाती है।

उपचार :–

आहार तथा पानी में एन्टीबायोटिक्स तथा विटामिन आदि देना चाहिये।

6. एवियन ल्यूकोसिस कॉम्पलेक्स

यह रोग तीन रूप में पाया जाता है–

(अ) आक्यूलर रूप

(ब) विसिरल रूप

(स) न्यूलर रूप

आक्यूलर रूप में आंख में रोग होता है तथा मुर्गी को दिखना बंद हो जाता है। आंख की पुतली का आकार बिगड़ जाता हैं।

विसिरल रूप में मुर्गी के भीतरी अंग जैसे :– लिवर, स्पलीन, किडनी, ओवीडक्ट आदि में आकार में वृद्धि होकर उसमें गांठें बन जाती है।

न्यूरल रूप में पैरों की नसों पर असर होता है तथा गांठ पड़ जाने से मुर्गी पहले लंगडाती है फिर चल–फिर नहीं सकती।

लक्षण :–

कलगी आदि पीलापन लिये होते है। मुर्गी सुस्त होकर खाना बंद कर देती है।

उपचार :–

कोई नही है केवल बचाव के लिये ऐसे संस्थान से चुजें क्रय करना चाहिये जिनकी मुर्गियों को यह रोग नही हो।

7. एवियन एन्सीफेलोमायलायटिस

यह रोग छोटी उम्र के मुर्गियों को होता है।

लक्षण :– रोगी चूजे के सिर, गर्दन, पूंछ, आदि में कंपन होता हैं। चूजा झटका देकर चलता है। सुस्त, खाना बंद कर सिकुड़कर बैठता है।

उपचार :– पानी में एन्टीबायोटिक्स तथा विटामिन आदि देना चाहिये।

बचाव :– रोगी पक्षियों के अण्डों से हैचिंग नहीं कराना चाहिये।

8. मेरेक्स (Mereck’s)

यह रोग 16 सप्ताह से कम उम्र की मुर्गियों में होता है और बहुत अधिक संख्या में मृत्यु हो जाती है।

लक्षण :–रोगी चूजा के पैरों मे पंखों में लकवा लग जाता है तथा मृत्यु हो जाती है। बड़े पक्षियों मे वजन कम होना, भवास में कठिनाई, लंगड़ा होना, एक पैर आगे तथा दूसरा मुड़ा हुआ रहता है। धीरे धीरे पक्षी की मृत्यु हो जाती है।

बचाव :– चूजों को एक दिन की उम्र में टीका लगाना चाहिए।